8 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस (खादर)

5 मार्च को खादर में 2 बजे से महिला दिवस मनाया गया। इस दिन के लिए समुदाय की महिलाओं व यूथ ने तैयारी की थी। इन लोगों ने पूरे समुदाय में 5 मार्च के कार्यक्रम की जानकारी दी। परीक्षा समय होने की वजह से युवा समूह के सदस्य छात्रा व छात्राएं कार्यक्रम में ज़्यादा संख्या में मौजूद नहीं थे। यूथ कार्यक्रम की सदस्य मधु ने उपस्थित समूह को 8 मार्च के बारे में जानकारी दी। 8 मार्च का दिन अपने आप में महत्वपूर्ण इतिहास का धनी है। इस दिन हम महिलाओं के संघर्षो को याद करते हैं व एक नई ताकत लेते हैं। 8 मार्च 1857 को न्यूयॉर्क में कपड़ा मिल में काम करने वाली महिलाओं ने काम की बेहतर स्थितियों की मांग को लेकर संधर्षो को शुरु किया था। 1908 में दोबारा 15000 महिलाओं ने नागरिक हकों की मांग करते हुए अभियान किए तथा अपने वोट देने के अधिकार की मांग की थी। पहले विश्व युद्ध के दौरान 1913 में यूरोप की महिलाओं ने शांति मार्च किया था और 1917 को रूसी इन्कलाब–अन्तर्राष्ट्रीय दिवस पर होने वाले प्रदर्शन ने दिल दहला दिया था।

5 मार्च को खादर के नये ब्लॉक जलेबी चौक में महिला दिवस मनाया गया। कुछ बैनर लगाए जिन में जेंडर, महिला सशक्तिकरण, एक नये समाज के सपने थे जो मुमकिन हैं। कार्यक्रम की शुरुआत *'अपना दिन हम मनाएं तो बड़ा मजा आए'*–गीत के साथ की गई–ऐसे ही अन्य कई प्रगतिशील गीत गाए। माईक पर खादर वासियों को आमंत्रित करते हुए कार्यक्रम कार्यक्रम की जानकारी दी गई। जिससे बड़ी मात्रा में पुरुषों के साथ स्त्रियां भी कार्यक्रम में जुड़ने लगीं। 'महक' नाट्य समूह द्वारा एक नाटक प्रस्तुत किया गया, जिसका नाम है– औरत। यह नाटक एक स्त्री के बचपन से विवाह तक की जीवन स्थितियों को दर्शाता है। इस नाटक के मुख्य बिन्दु थे–

- *जेंडर के आधार पर लड़कियों के साथ भेदभाव और गैरबराबरी*
- *शिक्षा का महत्व व लड़कियों को बराबर की शिक्षा में हिस्सेदारी*
- *महिला–हिंसा के अनेक रुप, जिन्हें वह झेलती है।*
- *नशा*

इस नाटक का एक प्रभाव अवश्य रहा कि लोगों को कहीं यह समझ आया कि रोजमर्रा में औरतों व लड़कियों के साथ जो भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता है–वही दरअसल उनके जीवन में हिंसा को बढ़ाती और दुखद हालात पैदा करते हैं।
इस नाटक के बाद 8 मार्च के विषय में बताया गया व कहा गया कि हर संघर्ष जो समाज की बेहतरी के लिए होता है वह महत्वपूर्ण है फिर वह छोटा हो या बडा। समुदाय में फैली हर गैरबराबरी को मिलकर ही खत्म किया जा सकता है। एक व्यक्ति कभी भी संघर्षो को अकेले ही आगे नही ले जा सकता उस में समुदाय की सकारात्मक ताकत व हिस्सेदारी की ज़रूरत है। अंत में– 'पर लगा लिए हैं हमने, अब पिंजरों में कौन बैठेगा' गीत से कार्यक्रम का समापन किया गया।

इस कार्यक्रम में जागोरी सदस्य के अलावा हमारी पूर्व सदस्य एक्टीविस्ट नीलम कार्यक्रम में उपस्थित थे। दीपालय, मोबाइल–क्रेश, अग्रगामी, इताशा व कास्प आदि एन.जी.ओ. साथी भी कार्यक्रम में सहभागी बने। समुदाय से लगभग 150 से 200 साथी कार्यक्रम में सहभागी थे।

फीडबैक– कुछ साथियों का कहना था कि नाटक में औरत को अपनी इस लड़ाई से निकलने के विकल्प भी दर्शाने चाहिए थे। संवादों में वह विकल्प थे, पर दिखाए जाने से उनका प्रभाव और ज़्यादा अच्छा हो सकता था। कुछ संवादों को बदलने की बात कही गई। यह सारे सुझाव महक टीम को दिए गए।